OPEN ACCESS JOURNALS
Indiana Journal of Multidisciplinary Research
Abbriviate Tittle- Ind J Multi Res
ISSN *(Online)*- 2583-3820
Journal Homepage Link- https://indianapublications.com/Journals/IJMR
DOI: 10.5281/zenodo.7157368

INDIANA PUBLICATIONS
PRODUCTIVE AND QUALITY RESEARCH

Research Article

Volume-02|Issue-02|2022

मिथिला के पर्व-त्योहारों एवं संस्कार गीतों का वैशिष्ट्य

डॉ लालति कुमारी

पी एच. डी, यू जी सी - नेट उत्तीर्ण, डी. एस. आर. डॉक्टरल फेलो, स0 प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, बी. एम. ए. कॉलेज, बहेरी (दरभंगा),

Article History
Received: 25.03.2022
Accepted: 17.04.2022
Published: 29.04.2022

Citation
कुमारी, ल. (2022). मिथिला के पर्व-त्योहारों एवं संस्कार गीतों का वैशिष्ट्य. *Indiana Journal of Multidisciplinary Research, 2*(2), 27-31.

Abstract: सर्वविदित है कि मिथिला की संस्कृति जितनी समृद्ध है उतनी अन्य किसी भी प्रान्त की नहीं I बिहार उतना प्राचीन नहीं है जितना कि मिथिला का पाँच हजार वर्षों से चला आता हुआ इतिहास संसार के प्राचीनतम इतिहास के रूप में प्रतिष्ठित है। यहाँ सालों भर अनेक प्रकार के पर्व त्योहार मनाए जाते हैं जिसके द्वारा लोक जीवन में हर्षोल्लास का फव्वारा उठता रहता है। जहाँ एक तरफ कार्तिक मास में भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक सामा-चकेबा वहीं दूसरी ओर नवरात्रि में झिझिया के नजारे देखने को मिलते हैं। सुखार की स्थिति में जट-जटिन एवं वर्षा का आनन्द कजरी, मल्हार गाकर लिया जाता है। ऐसे ही अनेकानेक पर्व-त्योहर मांगलिक अवसरों, धार्मिक कृत्यों प्रभृति के विभिन्न मौसमों एवं जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कार गीतों का अर्थ गर्भित सरस भाष-युक्त गान सुनने को मिलता है। ऐसे अवसरों पर पता चलता है कि यहाँ का लोकजीवन कितनी अधिक गहराई और गम्भीरता से व्यक्त हुआ है |

Keywords: मिथिला, संस्कार और त्योहारों|

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (**CC BY-NC 4.0**).

परिचय

मिथिला एक सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण प्रान्त है। इसकी लावण्यमयी मंजुलमूर्ति, मधुरिमा से भरी हुई सरसवेला और उन्मादिनी भावनाएँ हृदय को गुदगुदा देती। पाँच हजार वर्षों को पार कर चला आता हुआ, इसका इतिहास संसार के प्राचीनतम इतिहास के रूप में प्रतिष्ठित है। इसकी जमीन का भूतात्विक रचनाकाल पाँच लाख वर्ष प्राचीन है, और भूगर्भवेत्ताओं के अनुसार इसका भूपृष्ठ पृथ्वी के भूपृष्ठ की अपेक्षा आधुनिक है। आज से लगभग दस लाख वर्ष पहले इस प्रदेश की स्थिति जिसको हम मिथिला कहते हैं वैसी नहीं थी, जैसी की आज है। यह समुद्र का ही एक खंड था जो विन्ध्यगिरि श्रृंखला से हिमालय को विभक्त करता था, और पश्चिम पयोधि अरब सागर को बंगाल की खाड़ी पूर्व सागर से मिलता था। उस समय शैलाधिपति हिमालय समुद्र के गर्भ में ही समाधि मग्न था। मिथिला के पुर और जनपद दोनों ही नदियों पर आश्रित है, और कई दृष्टियों से धन-धान्य की धात्री इन नदियों का अस्तित्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मिथिला वासियों के मानस भूमि को स्वच्छसलिला नदियों की प्राणदायिनी धारा अपने जीवन रस से सिञ्चित करती है जिसका प्रमाण तीरभूक्ति (नदी किनारे की भूमि) शब्द में उपलब्ध होता है।

यहाँ की भाषा मैथिली है, जिसकी लिपि देवनागरी लिपि से थोड़ी भिन्न है और उसमें बंगला लिपि का आभास दृष्टिगोचर होता है। बिहार की प्रादेशिक भाषाएँ तीन हैं :- (क) मैथिली (ख) मगही और (ग) भोजपुरी। मैथिली चम्पारण, दरभंगा, पूर्वी मुंगेर, भागलपुर, पूर्णियां के पश्चिमी और मुजफ्फरपुर के पूर्वी भागों में बोली जाती है लेकिन दरभंगा, मधुबनी जिला के गाँवों में ही यह अपने शुद्ध रूप में प्रचलित है। मैथिली और मगही एक दूसरे से अधिक नजदीक हैं। इन दोनों भाषाओं के बोलने वालों का रीति-रिवाज और रहन-सहन में भी कोई विशेष अन्तर नहीं है | मैथिली में स्वर वर्ण 'अ' का उच्चारण स्पष्ट और मधुर होता है मैथिली की 'ई' और 'अति' क्रियाओं के बदले मगही में 'है' और भोजपुरी में 'बाटे' और 'हवे' प्रयुक्त होते हैं। अन्य भारतीय भाषाओं की तरह क्रिया-विशेषण के संयोग से वर्तमान काल बनाने में ये तीनों प्रादेशिक भाषा एक सी है।[1] विभिन्न पुस्तकों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि मिथिला की संस्कृति जितनी समृद्ध है उतना अन्य किसी भी प्रान्त की नहीं | यहाँ सालों भर अनेक प्रकार के पर्व-त्योहार मनाएँ जाते हैं, जिसके द्वारा लोक-जीवन में हर्षोल्लास का फब्बारा फूटता रहता है।

मिथिलांचल में जहाँ एक तरफ कार्तिक मास में भाई बहन के स्नेह का प्रतीक सामा चकेवा के गीतों की धूम होती हैं वहीं दूसरी तरफ नवरात्रि में झिझिया के नजारे देखने को मिलते हैं। सुखाड़ की स्थिति में जहाँ जट-जटिन के गीतों में मार्मिक अभिव्यक्ति गूँजती हैं, वहीं छठी मैया का गीत सर्वत्र प्रसिद्ध हैं I ऐसे ही अनेकानेक पर्व-त्योहार, मांगलिक अवसरों, धार्मिक कृत्यों व पूजन अवसरों पर यहाँ के संस्कार गीतों का अर्थ-गर्भित सरस भाषा युक्त गान सुनने को मिलता है। ऐसे अवसरों पर पता चलता है कि यहाँ का लोकजीवन कितनी अधिक गहराई और गम्भीरता से व्यक्त हुआ है। पूज्यवर पिताजी से प्राप्त निम्नलिखित गीत में मिथिला के पर्व त्योहारों की चर्चा को देखा जा सकता है:-

"राम लखन सन पाहुन जिनकर, सीता सनक जिनक बेटी, सोना सन भारत अँगना में चमकए मिथिला के मोती ।

***Corresponding Author:** डॉ लालति कुमारी

तात जनक सन ज्ञानी जग में अनसुइया सन भाईभेली, ब्रह्मा विष्णु स्वयं शिवशंकर शिशु बनि गोद खेलाईगेली,
भाल तिलकलय एहि रजकण सँ सुर-नर- मुनि ललचाय गेलै, व्यासक ध्वनि गुँजै है सधिखन, धधकै है व्यासक ज्योती । राम लखन……
मंडन मिश्र सदृश जहँ पंडित, वाचस्पति विद्या में निधान, नेता ललित समान देशहित, कैलनि अपन जीवन दान,
प्रेम परस्पर बाँटति घर-घर, मिथिला के मजदूर किसान, चरण पखारथि पावन गंगा, लह-लह-वन-उपवन खेती ।
रूहला-विहुला चौटी चंदा, पुजथि घर-घर नर नारी, नवरात्रि शिवरात्रि कोजगरा कखनहुँ लागे सोमवारी, मकर पचीसी सपता, विपता जितिया पावनि बर भारी, सामाचक भरद्वितिया अरिपन जगमग छैठ दिया वाती । राम लखन……
राजा बलि सन दानी के घर भिक्षालय भगवान एला, विद्यापति कवि कोकिल जग में कविता चतुर सुजान भेला,
भेष बदलि कय जिनका घर में उगना बनि भगवान एला, विद्यापति कवि कोकिल जग में कविता चतुर सूजन भेला,
भेष बदलि कए जिनका घर में उगना बनि भगवान एला, मर्यादा अछि बड़ दुल्हिन के पियर पट पियर धोती । राम लखन……

मिथिला की संस्कृति में जीवन से लेकर मृत्यु तक अनेक प्रकार के संस्कार होते हैं। ये सभी संस्कार संगीतमय हैं। सभी के लिए भिन्न-भिन्न लय एवं स्वर में गाए जाने वाले अनेक प्रकार के गीत हैं। पुत्र-जन्म के समय में गाये जाने वाले सोहर गीत सुनने में जितना प्यारा एवं जोश पैदा करने वाला लगता है, उतनी ही मृत्यु के समय गाए जाने वाले निर्गुण या उदासी में करूण रस ।

मिथिला के ग्रामीण क्षेत्र में 'सोहर' की रचना पद्धति अत्यन्त पुरानी है। मिथिला के लोक जीवन को आनन्दमय बनाने में अन्यानेक गीत शैलियों के अलावा सोहर का भी जबरदस्त हाथ है। पुत्र-जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में गली-कूची, टोले मुहल्ले और गाँव के कोने-कोने में गायिकाओं की महफिलें जुटती हैं। जच्चा-बच्चा का खुशियों से भरा आँगन सोहर के नशीले गानों से गूंज उठता है। बालाएँ, कुमारी युवतियाँ और बड़ी-बूढ़ी औरतें झुंड में बैठकर संगीत की मन्द मन्द बूंदे बरसाती हैं। प्रसूति का आँगन संगीतशाला में परिणत हो जाता है। शिशु जन्म के छठवें दिन उत्सव प्रारंभ होने से पहले प्रसूता आँगन में लाई जाती है जहाँ स्नानादि से निवृत्त हो वह स्वच्छ वस्त्राभूषण से सुसज्जित होती हैं। प्रसूता के इष्ट मित्र, बन्धुबान्धव छोटे-बड़े खुशमिजाज दिखते हैं। सारा परिवार हर्ष से फूला नहीं समाता । प्रसूता अगर सम्पन्न घराने की रही, तो उसके रिश्तेदार मुट्ठियाँ भर-भर कर इनाम बाँटते हैं।

पुत्र-जन्म के अलावा मुंडन और उपनयन संस्कार के उत्सव पर भी सोहर गाये जाते हैं। यद्यपि इसके रचयिताओं ने जगह-जगह पर व्याकरण के नियमों की अवहेलना की है, फिर भी इसकी टेक रागात्मिकता वृत्ति से प्रभावित हैं। इसका कारण यह है कि सोहर के रचना कौशल में ज्यादातर ग्रामीण स्त्रियों का हाथ है। इसलिए इसको रचना पद्धति सर्वसुलभ कोमलता सम्पन्न है और इसका सम्वादी स्वर सौन्दर्यमयी व्यन्जना से पूर्ण है। श्री कृष्णजी के जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले सोहर का एक पद्य इस प्रकार है, जो अधिकांशतः पुत्र जन्मोत्सव में गाया जाता है :-

'' नन्द-घर डंका वाजए सुख उपजावय रे, ललना रे जनमल श्री यदुनाथ कि नयन जुरायल रे,
सायल उबटन तेल ककहिया काजर रे, ललना रे होरिला लहरबा के दूध कि हुलसि पिआएब रे,
लहरत लाल पटोर पहिनि घर जायब रे, ललना रे नृत्य करय नट नागरि सब गुन आगरि रे,
बाजूबन्द बेसरि पैजनी रुनझुन बाजय रे, ललना रे अंकम पुलकि लगाय कि पलना झुलाएव रे,
लेव निछावर नन्दजी सॉ हैत गज रथ मणि रे , ललना रे लेब में सुपारी पान कि सुवरनक बेसरि रे I''

इस पद्य में एक सखी दूसरे सखी से कहती है-है सखी नन्द घर डंका बज रहा है जिसे सुनकर हृदय गदगद हो रहा है। आज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव है, हमारे नयन जुड़ा गये। हे सखी उबटन, तेल, कंघी, काजल आदि सभी उपयुक्त सामान लेकर शिशु श्रीकृष्ण का श्रृंगार करेंगे। नवजात शिशु को हुलस कर दूध पिलाउंगी और लहराते हुए लाल पटोर पहनकर घर जाऊँगी। शिशु जन्म के उत्सव में सर्वगुण सम्पन्न सुन्दरी नर्तकियाँ नन्द के घर नृत्य करने लगी। उनकी बाँहों में बाजूबन्द और नाक में बेसर है तथा उनके पैर की पैजनी रूनझुन बज रही है।

जिस प्रकार मिथिला में जन्म से लेकर छट्ठी, मुण्डन, उपनयन आदि संस्कारों के अवसर पर सोहर गीत गाए जाते हैं इसी प्रकार विवाह संस्कार के अवसर पर 'सम्मरि' या 'सम्मर' गीत गाये जाते हैं। इन गीतों का सम्बन्ध सीता स्वयंवर से होने के कारण इसमें तत्कालीन विवाह प्रथा का ही चित्र मिलता है। संस्कार संगीत महफिलों के लिए विवाह उत्सव एक सर्वोत्तम अवसर है। मिथिला का विवाह संस्कार बड़ा ही मनोरंजनक होता है। विवाह में बर एवं बारात आगमन से लेकर चतुर्थी, कर्म कंकण खुलने के दिन तक अनेक प्रकार के विधि व्यवहार होते हैं। मिथिला में विवाह संस्कार के अलग-अलग (विधा) में पृथक शैली के गीत प्रचलित हैं। विवाह गीत की इन विविध प्रकारों का वर्णन करना तो यहाँ सम्भव नहीं है, परन्तु विवाह गीत सम्मरि का पद्य इस प्रकार है :-

नगर अयोध्या राज उचित थिक, जहँ बसु दशरथ नन्द यो,
रामक जोड़ी बसथि जनकपुर छप्पन कोटि देल दान यो,
गया नोतव गदाधर नोतव काशी नोतव विश्वनाथ यो,
मृत्यु भुवन एक दानी नोतव बासुकि नाग पताल यो,

***Corresponding Author:** डॉ लालति कुमारी

राजपाट पर रामजी बइसल झटकि चलु बरिआत यो,
अठारह छौंहनि बाजन बाजै सवा लाखहि ढोल यो,
जयखन सुनता कतेक बुझता धारू ध्यान धन-लोक यो, पहिल दान गोदान यो
तेसर दान केल शाल देशाला चारिम दाम कन्यादान यो,
उखर आनल मूसर है दै केहन ठक-ठक ताल यो,
आमक पल्लव कंगलन बान्हल ब्रह्मा वेद पढ़ावि यो,
भेल विवाह चलल राम कोबर, सीता ले अंगुरि धरावि यो।'

मिथिला का लोकसाहित्य करुण रस से ओत-प्रोत है। करुण रस के इतने गीत शायद ही संसार के किसी प्राचीन अथवा नवीन लोक साहित्य में मिल सकते हैं। कविता के आदि अस्तित्व का मूल कारण करुणाजनक परिस्थिति ही है।

"मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीः समाः, यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधी काम मोहितम्।"

बाल्मीकि मुनि का यह करूण श्लोक करूणाजनक घटना का ही परिणाम है। भवभूति ने भी करुण रस को प्रमुख रस माना है :

"एकोरसः करूण एव निमित्तभेदात् भिन्नः पृथकपृथगिवाश्रयते विकत"

एक करुण रस ही निमित्त भेद से श्रृंगारादि रसों के रूप में पृथक् पृथक् प्रतीत होता है। श्रृंगारादि रस करुण रस के ही विवर्त हैं। मिथिला की संस्कृति ऐसी है कि विवाह संस्कार की समाप्ति के बाद जब दुल्हन डोली में बैठकर ससुराल जाने की तैयारी करती है उस समय मिथिला में एक विशिष्ट शैली का गीत गाया जाता है जो 'समदाउन' के नाम से प्रसिद्ध है। विदा के समय दुल्हिन की माँ, बहन, भौजी और सखियाँ सब उसके साथ गले लिपट कर रोती हैं। उस समय उनके संवेदनशील गीतों को सुनसुनकर पाषाण से कठोर हृदयवालों की भी आँखों से सावन-भादो की झड़ी लग जाती है, और उनकी वियोग वेदना से हृदय फटने लगता है। यहाँ विद्यापति रचित समदाउन के एक पद्य का अवलोकन किया जा सकता है। :

जखन सुनयना डोली दिश ताकथि, सीता भेली कनैत अधीर,
भरलो आँगन जतेक नर-नारी, ककरहु हृदय नहीं थीर,
चहुँदि रोबच सखी है सहेलिया, आमा के झहरनि नयन मोती नीर,
किए जे बेटी जानकी पोसल, उड़ि भेली देश फरार,
भनहिं विद्यापति सुनू हे सुनयना, इहो थिक नगर वेवहार I

मिथिला के लोकजीवन में जिस तरह लोकगीत एवं लोकनाट्य का महत्व देखा जाता है, इससे यह कहा जा सकता है कि गीत एवं नाट्य ही मिथिला का लोकजीवन है। यहाँ हर समय सभी वर्गों के लोगों द्वारा जन्म से मृत्युपर्यन्त लोकगीत मुखरित होते रहते हैं । जाँत पीसते समय, धान रोपते समय, नाव खेवते समय, मेला जाते समय, धान काटते समय, मंदिर में पूजा करते समय, गाय भैंस चराते समय, किसी के शुभागमन पर तथा किसी के विरह में गीत गाए जाते हैं, और उनका निश्चित भास है। हर जगह हर समय लोकगीत की माधुरी एवं लहरी व्याप्त है ।

नाट्य एक समन्वित कला होने के साथ-साथ प्रदर्शनकारी कला भी है जिसमें कथा सुनने के साथ-साथ दृश्यावलोकन की सुविधा भी विद्यमान है। मैथिली लोकनाट्य में गीतों का बाहुल्य भी देखा जाता है। इसमें अभिनय द्वारा कथावस्तु एवं नृत्य द्वारा भाव विस्तार किया जाता है ताकि इसे बोधगम्य बनाया जा सके। वास्तव में मोहक मनोरंजक और सहज बोधगम्य विद्या होने के कारण यह विद्या अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रिय होती है । मैथिली लोकनाट्य की एक और विशेषता है कि किसी विशेष वर्ग के कलाकारों द्वारा किसी विशेष अवसरों पर आयोजित होते रहते हैं। इन सभी नाट्यों का मूलाधार है नृत्य, संगीत और अभिनय । इन सभी नाट्यों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

- नृत्यमूलक तथा
- हास्य-व्यंग्य मूलक.

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' के अनुसार मैथिली में प्रायः चार प्रकार के लोकनाट्यों का उल्लेख है।

- भक्तिभावाश्रित लीलानाट्य
- प्रहसनात्मक नाट्य
- प्रेमाख्यान मूलक लोकनाट्य तथा
- विविध विषयक लोकनाट्य

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' द्वारा किया गया उपर्युक्त विभाजन मूलतः नृत्यमूलक एवं हास्य-व्यंग्य मूलक है। नृत्य संगीत की प्रधानता के कारण नृत्यमूलक लोकनाट्य में रामलीला, रमखेलिया, कृष्णलीला, विदापत, रासलीला आदि एवं इसके विविध प्रसंग नाट्य सभी को प्रस्तुत किया जा सकता है। धार्मिक एवं ऐतिहासिक लोकनाट्यों में राजा सलहेस, दोला कुमर, सती बिहुला, गोपीचन्द्र, हरिलता, गुगली, घटमा, शांखो ओझा, सुभद्रा हरण, रूक्मिणी हरण, कतिका कुमर, अल्हा उदल आदि की गणना की जा सकती है। इन सभी लोकनाट्यों में धर्म के प्रति आस्था लोक नाटकों के चरित्र का उत्कर्ष और क्षेत्राञ्चल की ऐतिहासिक घटनावली आदि अभिव्यक्त की गयी है। जट- जटिन, सामा-चकेवा, दौत, झिझिया, डोमकच, झुम्मर आदि महिला लोकनाट्यों में प्रमुख है। अभी मिथिला के सभी वर्गों में ऐसे लोकनाट्य प्रचलित हैं जो विशेष अवसरों पर आयोजित होते रहते हैं I जट-जटिन मिथिला के मिट्टी पर जन्मे मिथिलांचल का प्राचीनतम महिला लोकनाट्य है I इसका समय मुख्य रूप से जेठ, आषाढ़ और श्रावण मास है। साधारणतया सुखाड़ के समय गाँव-गाँव में इन लोकनाट्यों का अभिनय होता है। ऐसा लोक विश्वास है कि 'जट जटिन' लोकनाट्य का अभिनय होने से वर्षा होती है। इस लोक नाट्य के दौरान जो मेढ़क कूटने की प्रथा है, यह कूटा हुआ मेढ़क जिस व्यक्ति के आँगन में फेंका जाता है, वह व्यक्ति जितनी गाली देते हैं, उतनी ही वर्षा होती है। इस

***Corresponding Author:** डॉ लालति कुमारी

लोकनाट्य का सम्बन्ध कृषि कार्य से है, जो यहाँ के लोगों का प्राचीन पेशा रहा है। इसके लिए वर्षा एक आवश्यक तत्व है। अनावृष्टि मिथिला की नियति रही है जो राजा जनक के समय में भी हुई थी और अभी भी हो रही है। वैसे ज्योतिरीश्वर के वर्णरत्नाकर ग्रंथ में प्रतिगीत शब्द को स्व० रमानाथ झा द्वारा जट-जटिन गीत माना गया है। इस लोकनाट्य के लिए किसी मंच की आवश्यकता नहीं होती घर-आँगन की इसका मंच है। कभी-कभी घर-आँगन से बाहर भी इसका अभिनय किया जाता है। जट-जटिन लोकनाट्य में एक भी पुरुष अभिनेता या दर्शक नहीं हो सकते कारण इसमें कुछ ऐसा कथोपकथन है, जिसे पुरूष के समक्ष प्रस्तुत करने में महिला शर्माती है। इसलिए रात में भोजनोपरांत यह लोकनाट्य प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि इस समय पुरूष वर्ग भोजन करके सो जाते है, अतः ताक-झोंक से निर्भीक होकर स्त्रीगण इसका अभिनय करती है। इस लोकनाट्य में विभिन्न प्रकार के दृश्य देखने में आते है यथा कमला की अराधना, वर्षा के लिए विधवा ब्राह्मणी द्वारा हल चलाना, चीन बोना, मालिक द्वारा कम मजदूरी देना, चीन (एक प्रकार का अन्न) काटना, मछली बेचना, जटिन का गोदना गोदवाना, रोही दास का ऑपरेशन, जटिन का छुपना और जट द्वारा उसे खोजना, जट-जटिन का विवाह, जट का विदेश जाना, जटिन द्वारा जट की खोज आदि इन दृश्यों को जोड़कर एक बहुत अच्छा स्पष्ट कथानक का निर्माण हो जाता है।

झिझिया - मिथिलांचल के प्रायः सभी क्षेत्रों में झिझिया लोकनाट्य का प्रचार अभी भी है। इस लोकनाट्य का अवसर विशेष पर अभिनय किया जाता है। नवरात्रा में इसका अभिनय प्रारम्भ किया जाता है और विजयादशमी के दिन इसका आयोजन समाप्त कर दिया जाता है। इस लोकनाट्य की अभिनय प्रणाली अन्य लोकनाट्य से सर्वथा भिन्न है। चार पाँच मिट्टी के घड़े में छोटे-छोटे छिद्र कर दिये जाते है फिर उसमें दीप जला दिया जाता है। अब उस छिद्र बाले घड़े को महिला अपने माथे पर रखकर नाचती और गाना गाती है। इसमें नृत्य करने वाली एक ही स्त्री होती है लेकिन गीत गानेवाली बहुत सी महिलाएँ होती है। इस लोकनाट्य के माध्यम से मिथिला की पुरानी रूढ़ि डायन जोगिन को गाली दी जाती है। झिझिया लोकनाट्य की आन्तरिक भावना जन कल्याणकारी है। झिझिया खेलने वाली महिलाएँ नाच-नाच कर गाना गाती है I झिझिया लोकनाट्य का उद्देश्य है कि हमारे समाज में किसी भी प्रकार का अनिष्ट अथवा उपद्रव नहीं हो नवरात्रा में ही इस लोकनाट्य का अभिनय किया जाता है। इसका एक कारण और है कि इस समय डायन जोगिन अपनी साधना के पश्चात सिद्धि प्राप्त करती है, यहाँ के लोगों में अंधविश्वास अधिक है। झिझिया लोकनाट्य जादू-टोना से सम्मानित अनिष्टों का सामूहिक विरोध करने हेतु खेला जाता है।

डोमकछ - डोमकछ एक प्रसिद्ध एवं प्राचीन लोकनाट्य है, जिसे भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। यथा कनौज में नकटा, ब्रज में खोइया, हरियाणा में जोड़िया । भोजपुर तथा मिथिला में डोमकछ । मिथिला के उच्च वर्गों में इस लोकनाट्य के कई अन्य नाम भी हैं जैसे- चतुर्थी, घसकट्टी तथा दसौता I जहाँ तक इस लोकनाट्य के जन्मस्थान तथा शुरूआत के समय की बात आती है तो मिथिला में इस लोकनाट्य की परंपरा श्रीराम विवाह के समय से माना जाता है। एक जनश्रुति के अनुसार जनकपुर में स्त्रीगण मर्यादापुरुषोत्तम राम को डोमकछ नाच दिखलायी थी Iउच्चवर्ग के जन समुदाय में चतुर्थी के समय अभिनीत किये जाने वाले इस लोकनाट्य के अवसर पर एक महिला पुलिस की भूमिका में रहती है। पुलिस बनने वाली अपने हाथ में रस्सी रखती है और दरोगा बनने वाली महिला अपने हाथ में डंडा । पुलिस दुलहा की कमर में डोरी बाँध देती है और डाँट फटकार शुरू करती है। कन्या की भूमिका में महिलाएँ गाना गाती हैं।

बाबू दरोगा जी, कौने कसुर से पियबा बान्हल मोर,
नहिं मोर पियबा लुच्चा लम्पट नहि मोर पियबा चोर बाबू
...
नहि तोर पियबा, लुच्चा लम्पट नहिं तोर पियबा चोर,
तोर पियबा निशा में मातल तैं बान्हल डोर बाबू,
धारी बेचि अधिकारी के देवनि, लोटा बेचि पटवारी,
लोचन बेचि दरोगा के देवनि, पियबा लेवनि छोड़ाई बाबू
दरोगा जी.....

इस गीत को गाने के बाद दुलहा से कुछ पैसा वसूल किया जाता है। पैसा वसूलने के बाद वर की कमर से रस्सी खोल दी जाती है। तत्पश्चात दुलहा के मौसी और माता की भूमिका में महिलाएँ आती है जिनके साथ विभिन्न ढंग से हँसी मजाक किया जाता है।

सामा चकेवा- साम चकेवा लोकनाट्य पौराणिक कथा पर आधारित है I मिथिला में महिला वर्ग अपने भाई के कल्याणार्थ छठ पर्व के खड़ना या पारन दिन से प्रारंभ कर पूर्णिता तक किया करती है। इसमें सबसे पहले सामा-चकेवा तब सतभैया, बाटो-बहिन, झाँझी कुकुर, बृन्दावन, चुगला आदि प्रमुख पात्र बनाकर सभी जाति की बहने उन्हें पिठार से दोरकर फिर विभिन्न रंगों से उसे सजाती है। ढक्कन वाला पौती से सामा चकेवा को भोजन के लिए नया चूड़ा एवं गुड़ दिया जाता है। ये सामा जाम्बवती और श्रीकृष्ण की कन्या है। नये धान के शीश से इनकी पूजा रात के समय गीत गाकर की जाती है। चाँदनी रात में सभी बहने अपने-अपने भाई का नाम लेकर गीत गाती है|

सामा चकेवा लोकनाट्य का कथा इस प्रकार है कृष्ण की बेटी का नाम सामा और सामा के भाई का नाम साम्ब था तथा सामा के पति का नाम चक्रवाक (चकवा) था डिहुली नाम की उन्हें एक नौकरानी थी। सामा प्रतिदिन अपने फुलवारी में टहलने के लिए जाती थी। एक दिन डिहुली ने कृष्ण के समक्ष आकर चुगली कर दी कि जब सामा बृन्दावन में टहलने के लिए जाती है, उस समय ऋषियों के साथ रमण करती है। इस पर कृष्ण ने अपनी बेटी सामा को शाप दे दिया कि तुम चिड़िया बन जाओ। तभी सामा चिड़िया बनकर जंगल की ओर उड़ गई। पत्नी बियोग में सामा के पति चक्रवाक भी पक्षी बनकर जंगल में विचरण करने लगे। उस समय सामा के भाई साम्ब कहीं अन्यत्र गये थे। जब उनको पता चला की पिताजी के शाप से मेरी बहन पक्षी बन गई तो उसे बहुत दुःख

***Corresponding Author:** डॉ लालति कुमारी

हुआ और वे घोर तपस्या में लीन हो गए, ताकि पिताजी के श्राप से अपनी बहन को मुक्त करवाया जा सके। कृष्ण भगवान प्रसन्न होकर फिर उन्हें मनुष्य होने का वरदान देते है। पुनः वे लोग मनुष्य रूप धारण कर पृथ्वी पर विचरण करने लगे। उसी समय अपने भाई के दीर्घायु होने की कामना से मिथिला में यह सामा-चकेवा लोकनाट्य प्रारंभ हुआ। साम्ब और साम्बा का भाई-बहन का प्रेम प्रेरेणादायी बन गया। साम्बा का भातृ-प्रेम बहनों के लिए आदर्श बन गया। इस प्रकार मिथिला के विभिन्न लोकनाट्य जो पौराणिक कथा पर आधारित सभी तबके के महिलाओं द्वारा सहज अभिनीत एवं मनोहारी है।

सन्दर्भ

1. मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ० दुर्गानाथ झा श्रीश 0-119
2. मिश्र प्रो० कृष्णानन्द (पिताजी) से प्राप्त I
3. सिंह राम एकबाल, मैथिली लोक गीत, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
6. कुमारी डॉ० लालति, मैथिली भक्ति काव्य का संगीत शास्त्रीय अध्ययन, शोध प्रबंध, 2007
7. कुमारी डॉ० लालति मिथिला की महिला प्रधान प्रदर्श लोक कलाएँ (सांगीतिकता का विशेष संदर्भ
8. तत्रैव

***Corresponding Author:** डॉ लालति कुमारी